संगठन की शक्ति - एक संकल्प

सभी किस संकल्प में बैठे हो? सभी का एक संकल्प है ना? जैसे अभी सभी का एक संकल्प चल रहा था, वैसे ही सभी एक ही लगन अर्थात् एक ही बाप से मिलन के, एक ही अशरीरी बनने के शुद्ध-संकल्प में स्थित हो जाओ। तो सभी के संगठन रूप का यह एक शुद्ध संकल्प क्या कर सकता है? किसी के भी और दूसरे संकल्प न हों। सभी एक-रस स्थिति में स्थित हों तो बताओ वह एक सेकण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति क्या कमाल कर सकती है? तो ऐसे संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एक-रस स्थिति बनाने का अभ्यास करना है तब ही विश्व के अन्दर शक्ति सेना का नाम बाला होगा।

जैसे स्थूल सैनिक जब युद्ध के मैदान में जाते हैं तो एक ही ऑर्डर से, एक ही समय, वे चारों ओर अपनी गोली चलाना शुरू कर देते हैं। अगर एक ही समय, एक ही ऑर्डर से वे चारों ओर घेराव न डालें तो विजयी नहीं बन सकते। ऐसे ही रूहानी सेना, संगठित रूप में, एक ही इशारे से और एक ही सेकेण्ड में, सभी एक-रस स्थिति में स्थित हो जायेंगे तब ही विजय का नगाड़ा बजेगा। अब देखो कि संगठित रूप में क्या सभी को एक ही संकल्प और एक ही पॉवरफुल स्टेज के अनुभव होते हैं या कोई अपने को ही स्थित करने में मस्त होते हैं, कोई स्थिति में स्थित होते हैं और कोई विघ्न विनाश करने में ही व्यस्त होते हैं? ऐसे संगठन की रिजल्ट में क्या विजय का नगाड़ा बजेगा?

विजय का नगाड़ा तब बजेगा जब सभी के सर्व संकल्प एक संकल्प में समा जायेंगे, क्या ऐसी स्थिति है? क्या सिर्फ थोड़ी-सी विशेष आत्माओं की ही एक-रस स्थिति की अंगुली से कलियुगी पर्वत उठना है या सभी की अंगुली से उठेगा? यह जो चित्र में सभी की एक ही अंगुली दिखाते हैं उसका अर्थ भी संगठन रूप में एक संकल्प, एक मत और एक-रस स्थिति की निशानी है। तो आज बापदादा बच्चों से पूछते हैं कि यह कलियुगी पहाड़ कब उठायेंगे और कैसे उठायेंगे? वह तो सुना दिया, लेकिन कब उठाना है? (जब आप ऑर्डर करेंगे) क्या एक-रस स्थिति में एवर-रेडी हो? ऑर्डर क्या करेंगे? ऑर्डर यही करेंगे कि एक सेकण्ड में सभी एक-रस स्थिति में स्थित हो जाओ। तो ऐसे ऑर्डर को प्रैक्टिकल में लाने के लिए एवर-रेडी हो? वह एक सेकण्ड सदा काल का सेकण्ड होता है। ऐसे नहीं कि एक सेकण्ड स्थित हो फिर नीचे आ जाओ।

जैसे अन्य अज्ञानी आत्माओं को ज्ञान की रोशनी देने के लिये सदैव शुभ भावना व कल्याण की भावना रखते हुए प्रयत्न करते रहते हो। ऐसे ही क्या अपने इस दैवी संगठन को भी एक-रस स्थिति में स्थित करने के, संगठन की शक्ति को बढ़ाने के लिए एक-दूसरे के प्रति भिन्न-भिन्न रूप से प्रयत्न करते हो? क्या ऐसे भी प्लैन्स बनाते हो जिससे कि किसी को भी इस दैवी संगठन की मूर्त में एक-रस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार हो, ऐसे प्लैन्स बनाते हो? जब तक इस दैवी संगठन की एक-रस स्थिति प्रख्यात नहीं होगी तब तक बापदादा की प्रत्यक्षता समीप नहीं आयेगी। ऐसे एवर-रेडी हो? जबकि लक्ष्य रखा है विश्व महाराजन् बनने का, इनडिपेन्डेन्ट राजा नहीं। ऐसे अभी से ही लक्षण धारण करने से लक्ष्य को प्राप्त करेंगे ना? हरेक ब्राह्मण की रेसपॉन्सीबिलिटी है। न सिर्फ अपने को एक-रस बनाना है लेकिन सारे संगठन को एक-रस स्थिति में स्थित कराने के लिये सहयोगी बनना है। ऐसे नहीं खुश हो जाना कि मैं अपने रूप से

ठीक ही हूँ। लेकिन नहीं।

अगर संगठन में व माला में एक भी मणका भिन्न प्रकार का होता है तो माला की शोभा नहीं होती। तो ऐसे संगठन की शक्ति ही इस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है। आत्म-ज्ञान और परमात्म-ज्ञान में अन्तर यह है। वहाँ संगठन की शक्ति नहीं होती लेकिन यहाँ संगठन की शक्ति है। तो जो इस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है इससे ही विश्व में सारे कल्प के अन्दर वह समय गाया हुआ है। एक धर्म, एक राज्य, एक मत–यह स्थापना कहाँ से होगी? इस ब्राह्मण संगठन की विशेषता देवता रूप में प्रैक्टिकल चलती है इसलिये पूछ रहे हैं कि यह विशेषता, जिससे कमाल होनी है, नाम बाला होना है, प्रत्यक्षता होनी है, साधारण रूप, अलौकिक रूप प्रत्यक्ष होना है, अब प्रत्यक्ष में है? इस विशेषता में एवर-रेडी हो? संगठन के रूप में एवर-रेडी? कल्प पहले की रिज़ल्ट तो निश्चित है ही लेकिन अब घूंघट को हटाओ, सभी सजनियाँ घूंघट में हैं। अब अपने निश्चय को साकार रूप में लाओ। कहीं-कहीं साकार रूप, आकार में हो जाता है। इसको साकार रूप में लाना अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज को प्रत्यक्ष करना है। उस दिन सुनाया था ना कि परिवर्तन सभी में आया है लेकिन अब सम्पूर्ण परिवर्तन को प्रत्यक्ष करो। जब अपना भी वर्णन करते हो तो यही कहते हो परिवर्तन तो बहुत हो गया है। फिर भी... यह 'फिर भी' शब्द क्यों आता है? यह शब्द भी समाप्त हो जाये। हरेक में जो मूल संस्कार हैं, जिसको आप लोग नेचर कहते हो, वह मूल संस्कार अंश-मात्र में भी न रहें। अभी तो अपने को छुड़ाते हो। कोई भी बात होती है तो कहते हैं मेरा यह भाव नहीं था। मेरी नेचर ऐसी है, मेरा संस्कार ऐसा है और ऐसी बात नहीं थी। तो क्या यह सम्पूर्ण नेचर है?

हरेक का जो अपना मूल संस्कार है वही आदि संस्कार है। उनको भी जब परिवर्तन में लायेंगे, तब ही सम्पूर्ण बनेंगे। अब छोटी-छोटी भूलें तो परिवर्तन करना सहज ही है। लेकिन अब लास्ट पुरुषार्थ अपने मूल संस्कारों को परिवर्तन करना है तब ही संगठन रूप में एक-रस स्थिति बन जायेगी। अब समझा? यह तो सहज है ना–करना? कॉपी करना तो सहज होता है। अपना-अपना जो मूल संस्कार है, उसको मिटाकर बापदादा के संस्कारों को कॉपी करना सहज है या मुश्किल है? इसमें कॉपी भी रीयल हो जायेगी। सभी बापदादा के संस्कारों में समान हो। एक-एक बापदादा के समान हो गया फिर तो एक-एक में बापदादा के संस्कार दिखाई देंगे। तो प्रत्यक्षता किसकी होगी? बापदादा की। जैसे भक्ति-मार्ग में कहावत है–जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है। लेकिन यहाँ प्रैक्टिकल में जहाँ देखें, जिसको देखें वहाँ बापदादा के संस्कार ही प्रैक्टिकल में दिखाई देवें। यह मुश्किल है क्या? मुश्किल इसलिए लगता है जब फॉलो करने के बजाय अपनी बुद्धि चलाते हो। इसमें अपने ही संकल्प की जाल में फँस जाते हो। फिर कहते हो कैसे निकलें? और निकलने का पुरुषार्थ भी तब करते हो जब पूरा फँस जाते हो इसलिए समय भी लगता है और शक्ति भी लगती है। अगर फॉलो करते जाओ तो समय और शक्ति दोनों ही बच जायेंगी और जमा हो जायेंगी। मुश्किल को सहज बनाने के लिये, लास्ट पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करने के लिये कौन-सा पाठ पक्का करेंगे? जो अभी सुनाया कि फॉलो-फादर। यह तो पहला पाठ है। लेकिन पहला पाठ ही लास्ट स्टेज को लाने वाला है इसलिए इस पाठ को पक्का करो। इसको भूलो मत। तो सदाकाल के लिए अभुल, एकरस बन जायेंगे। अच्छा!

ऐसे तीव्र पुरुषार्थी, सदा एक-रस, एक-मत और एक ही के लगन में रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को नमस्ते।

दूसरी मुरली 11-4-73

परिवर्तन

वर्तमान समय को परिवर्तन का समय कहते हैं। इस समय के अनुसार जो निमित्त बने हुए हैं उनमें भी अवश्य हर समय परिवर्तन होता जा रहा है तभी तो उनके आधार से समय परिवर्तन होता है। समय एक परिवर्तन का आधार है। परिवर्तन करने वालों के ऊपर अर्थात् जो परिवर्तन करने के लिए निमित्त बने हुए हैं, वह अपने में ऐसे अनुभव करते हैं कि हर समय मन्सा, वाचा और कर्मणा सभी रूप से परिवर्तन होता जा रहा है? इसको कहेंगे– 'चढ़ती कला का परिवर्तन'। परिवर्तन तो द्वापर में भी होता है, परन्तु वह है गिरती कला का परिवर्तन। अभी संगम पर है चढ़ती कला का परिवर्तन। तो जब समय अनुसार भी चढ़ती कला का परिवर्तन है, जो तो निमित्त आधार मूर्तियाँ हैं उनमें भी अवश्य ऐसे ही परिवर्तन है। ऐसे अनुभव करते हो कि परिवर्तन होता जा रहा है? परिवर्तन की स्पीड कभी चेक की है? परिवर्तन तो एक सप्ताह में होता है, एक दिन में और एक घण्टे में भी होता है, हाँ, टोटल कहेंगे परिवर्तन हो रहा है। लेकिन अभी के समय-प्रमाण परिवर्तन की स्टेज क्या होनी चाहिए, वह अनुभव करते हो? जो मुख्य निमित्त बने हुए महावीर हैं यदि उनको किसी भी बात में परिवर्तन लाने में समय लगता है, तो फाईनल परिवर्तन में भी अवश्य समय लगेगा।

निमित्त बने हुए महावीर जो हैं वह हैं मानों समय की घड़ी। जैसे घड़ी समय स्पष्ट दिखाती है, इसी प्रकार महावीर जो बनते हैं, निमित्त बने हुए हैं, वह भी घड़ी हैं, तो घड़ी में समय नज़दीक दिखाई पड़ता है या दूर? स्वयं घड़ी हो और स्वयं ही साक्षी हो समय को चेक करने वाले हो, तो परिवर्तन की प्रगति फास्ट है? फाइनल परिवर्तन जिससे सृष्टि का भी फाइनल परिवर्तन हो। अभी आप में थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन होता है, तो सृष्टि की हालतों में भी थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन है। लेकिन फाइनल सम्पूर्ण परिवर्तन की निशानी क्या है, जिससे समझें कि यह परिवर्तन की सम्पूर्ण स्टेज है?

अभी के परिवर्तन की स्टेज, सम्पूर्ण परिवर्तन की निशानी, वर्ष गिनती करते-करते अब बाकी समय क्या रहा है? परिवर्तन ऐसा हो जो सभी के मुख से निकले कि इनमें तो पूरा ही परिवर्तन आ गया है। अपने परिवर्तन की बात पूछते हैं, सदा काल के लिए नेचुरल रूप में दिखाई दे, वह कैसे होगा? अभी नेचुरल रूप में नहीं है। अब पुरुषार्थ से थोड़े समय के लिए वह झलक दिखाई देती है लेकिन नेचुरल रूप सदा काल रहता है तो सम्पूर्ण परिवर्तन की निशानी यह है। हरेक में जो कमजोरी का मूल संस्कार है यह तो हरेक अपना-अपना जानते हैं। कभी भी कोई स्टेज में सम्पूर्ण पास नहीं होते, परसेन्टेज में पास हो जाते हैं, इसका कारण यह है। तो हर बात में हरेक में विशेष रूप से जो मूल संस्कार है, जिसको आप नेचर कहती हो तो वह दिखाई देवे कि उनका पहले यह संस्कार था, अभी यह नहीं है। आपस में एक-दूसरे के मूल संस्कार वर्णन भी करते हैं। यह पुरुषार्थ में बहुत अच्छे हैं लेकिन यह संस्कार इनको समय-प्रति-समय आगे बढ़ने में रूकावट डालता है। उन मूल संस्कारों में जब तक पूरा परिवर्तन नहीं हुआ है तब तक सम्पूर्ण विश्व का परिवर्तन हो नहीं सकता। सभी में सम्पूर्ण परिवर्तन हो वह तो दूसरी बात है। वह तो नम्बरवार रिजल्ट में भी होता है। लेकिन जो परिवर्तन के मूल आधार मूर्तियाँ हैं जिनको महावीर और महारथी कहते हैं उन के लिए यह परिवर्तन आवश्यक है। जो कोई भी ऐसे वर्णन न करे कि इनके यह संस्कार तो शुरू से ही हैं इसलिए अब परसेन्टेज में भी दिखाई देते हैं। यह वर्णन करने में नहीं आयें, दिखाई

न दें, इसको कहा जाता है सम्पूर्ण परिवर्तन। अगर जरा अंश मात्र भी हैं तो उसको सम्पूर्ण परिवर्तन नहीं कहेंगे। साधारण परिवर्तन महारथियों से थोड़ेही पूछेंगे। जो विश्व-परिवर्तन के निमित्त बने हुए हैं उनके परिवर्तन की स्टेज भी औरों से ऊंची होगी तो यह चेकिंग होनी चाहिए? रात-दिन का अन्तर दिखाई दे, इस पर ही लक्की स्टार्स का गायन है। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा तो अपने स्टेज पर हैं, लेकिन सम्पूर्ण परिवर्तन में लक्की स्टार्स का नाम बाला है। वर्तमान समय साकार रूप में फॉलो तो सभी आप लोगों को करते हैं ना? बुद्धि योग से शक्ति लेना, बुद्धियोग से श्रेष्ठ कर्म को फॉलो करना–वह तो मात-पिता निमित्त हैं। लेकिन साकार रूप में अब किसको फॉलो करेंगे? जो निमित्त हैं। तो परिवर्तन का ऐसा उदाहरण बनो। वर्ष में एक-दो बारी भी ऐसा संगठन हो जाये। हर समय के संगठन में अपनी चढ़ती कला का परिवर्तन है। जैसे जो वर्ष बीत चुका है, उसमें स्नेह, सम्पर्क, सहयोग, इसमें चढ़ती कला और परिवर्तन है। अभी सम्पूर्ण स्टेज प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। इस वर्ष में यह परिवर्तन विशेष रूप में होना आवश्यक है।

अब धीरे-धीरे प्रत्यक्षता के लिये जानबूझ कर बम लगाने शुरू किए हैं ना? जब धर्म-युद्ध की स्टेज पर आना है। आप लोग एक बात में ही हार खिला सकते हो कि धर्म और धारणा, आप लोगों का प्रैक्टिकल नहीं है और परमात्म-ज्ञान का प्रूफ प्रैक्टिकल लाइफ है। एक तरफ धर्म-युद्ध की स्टेज, दूसरी तरफ प्रैक्टिकल धारणामूर्त की स्टेज। अगर इन दोनों का साथ नहीं होगा तो आप लोगों की जो चैलेंज है प्रैक्टिकल लाइफ की, वह प्रत्यक्ष रूप में दिखाई नहीं देगी। जैसे-जैसे आगे आते जाते हो, वैसे इस बात पर भी अटेन्शन देना है। प्रैक्टिकल में ज्ञान अर्थात् धारणामूर्त, ज्ञान मूर्त वा गुण-मूर्त। मूर्त से भी वह ज्ञान और गुण दिखाई देवें। आजकल डिसकस करने से अपनी मूर्त को सिद्ध नहीं कर सकते लेकिन मूर्त से उन को एक सेकण्ड में शान्त करा सकते हो। एक तरफ भाषण हो, लेकिन दूसरी तरफ फिर प्रैक्टिकल मूर्त भी हो, तब धर्म-युद्ध में सक्सेसफुल होंगे; इसलिए जैसे सर्विस का प्रोग्राम बनाते हो, साथ-साथ अपने प्रोग्राम में भी प्रोग्रेस करो। यह भी होना आवश्यक है। अपने पुरुषार्थ की प्रोग्रेस का, अपने-अपने पुरुषार्थ के भिन्न-भिन्न अनुभव की लेन-देन करने का भी प्रोग्राम साथ-साथ होना चाहिए। दोनों का बैलेन्स साथ-साथ हो। अच्छा!

वरदान:- सम्पूर्ण समर्पण की विधि द्वारा अपने पन का अधिकार समाप्त करने वाले समान साथी भव

जो वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ में राज्य करेंगे–इस वायदे को तभी निभा सकेंगे जब साथी के समान बनेंगे। समानता आयेगी समर्पणता से। जब सब कुछ समर्पण कर दिया तो अपना वा अन्य का अधिकार समाप्त हो जाता है। जब तक किसी का भी अधिकार है तो सर्व समर्पण में कमी है इसलिए समान नहीं बन सकते। तो साथ रहने, साथ उड़ने के लिए जल्दी-जल्दी समान बनो।

स्लोगन:-

अपने समय, श्वांस और संकल्प को सफल करना ही सफलता का आधार है।

मन्सा सेवा के लिए

''मैं लाइट माइट हाउस हूँ'' इस स्वरूप में स्थित हो चारों ओर लाइट माइट का प्रभाव फैलाओ। अन्तिम पावरफुल स्थिति में स्थित हो अन्त:वाहक शरीर द्वारा सेवा करो।